जीत्या हरखे पौरसे, सूरातन अंग न माए।
हार्‌या तिहां सोक पामे, करे मुख त्राहे त्राहे।। ३३ ।।

जो अपनी ताकत से जीतते हैं उनको अपनी बहादुरी की उमंग नहीं समाती। जो हार जाते हैं उनको दुःख होता है और मुख से हाय-हाय करते हैं।

कोई मांहें रोगिया, अने कोई मांहें अंध।
कोई लूला कोई पांगला, रामत एह सनंध।। ३४ ।।

कोई रोगी है। कोई अन्धा है। कोई लूला है। कोई लंगड़ा है। इस तरह का यह खेल है।

कोई मांहें फकीर फरतां, उदम नहीं उपाय।
उदर कारण कष्ट पामे, भीखे पेट न भराय।। ३५ ।।

इस संसार में कोई फकीर बनकर घूमता है जिसे रोजी का कोई साधन नहीं। पेट भरने के लिए वह कष्ट उठाते हैं। फिर भी भीख मांगने से पेट नहीं भरता। तृष्णा बनी ही रहती है।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ८८ ।।

रामतमां वली रामत (खेल में खेल)

ए रामत मांहें जे रामतो, तेनो न लाभे पार।
ए बेखों मांहें वली बेख सोभे, स्वांग सहु संसार।। १ ।।

इस खेल में जो खेल रहे हैं उनका शुमार (गिनती) नहीं है। इन भेषों में वह अपना सुन्दर भेष बनाकर संसार में ढोंग रचते हैं।

कोई बेख जो साध कहावे, कोई चतुर सुजाण।
कोई बेख जो दुष्ट कहावे, कोई मूरख अजाण।। २ ।।

कोई साधुओं का भेष बनाते हैं। कोई चतुर ज्ञानियों वाला भेष बनाते हैं। कोई दुष्ट पापियों वाला भेष बनाते हैं और कोई मूर्ख अनजाने बनते हैं।

अनेक पगथी परव परवा, दया दान देवाय।
देखाडूं सहु करी सागर, मांहेंना मांहें समाय।। ३ ।।

कई लोग प्याऊ बनवाकर, कई रैन बसेरा बनवाकर, दया का दान देकर दानी कहलाते हैं। संसार में अपनी साहूकारी दिखाकर मन ही मन में खुश होते हैं।

अनेक देहरा अपासरा, मांहें मुनारा मसीत।
तलाब कुआ कुंड वावरी, मांहें विसामां कई रीत।। ४ ।।

कई मन्दिर, कई जैन मठ, कई गिरजाघर, कई मस्जिद, तालाब, कुआं, कुण्ड, वावरी, कई तरह की धर्मशालाएं बनवाते हैं।

कई जुगते जगन करतां, कई जुगते उपचार।
कई जुगते धरम पालें, पण हिरदे घोर अंधार।। ५ ।।

कई आचार विचार से यज्ञ करते हैं। कई रोगियों का इलाज करते हैं। इस तरह से अनेक तरीके से अपना धर्म पालते हैं (कर्तव्य करते हैं), पर उनके हृदय में अज्ञानता का घोर अन्धकार ही रहता है।

Nijanand App

कई जुगते सिध साधक, कई जुगते सन्यास।
कई जुगते देह दमे, पण छूटे नहीं जमफांस।। ६ ।।

कई युक्ति से सिद्ध साधक बनते हैं। कई युक्ति से संन्यासी बनते हैं। कई अपनी देह का दमन करते हैं, परन्तु इस तरह से आवागमन का चक्कर नहीं छूटता।

कई जुगते वैराग वरते, कई जोग पाले सिध।
मठवाले पिंड पाले, पण नहीं परम नी निध।। ७ ।।

कई वैरागी होकर घूमते हैं। कई योग साधना करते हैं। कई मठ-मन्दिर बनाकर अपना शरीर पालते हैं, पर उनको परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती।

आपने नव ओलखे, नव ओलखे परमेस्वर।
तो पार ते केम पामे, जिहां सुध न पोते घर।। ८ ।।

कई न तो अपने को पहचानते हैं और न उनको परमात्मा की ही पहचान है। जिनको अपनी व अपने घर की ही सुध नहीं है वह भवसागर से पार कैसे जाएंगे?

खटचक्र नाडी पवन, साधे अजपा अनहद।
कई त्रवेनी त्रकुटी, जोती सोहं राते सब्द।। ९ ।।

कई नाड़ियों के छः चक्र (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, विशुद्ध, अनाहत, आज्ञा, सहस्रार) शोधन कर, पवन को (अपने स्वांसों को) रोककर अजपा जाप, अनहद (ओम-सोहम्) की आवाज सुनते हैं और कई अनहद नाद, स्वर (ताल, मृदंग, झांझ, डम्फ, किंकिण, सिंह गर्जन, मुरली, शहनाई, वीणा, बादल की गर्जना) सुनते हैं। कई अपने माथे में त्रिकुटी पर (इंगला, पिंगला, सुषुम्ना) ध्यान लगाकर ओम-सोहम् के शब्द में मग्न रहते हैं।

कोई खट दरसनी कहावे, धरे ते जुजवा बेख।
पारब्रह्मने पामे नहीं, रुदे अंधेरी वसेख।। १० ।।

कई छः शास्त्रों के ज्ञानी (न्याय, मीमांसा, वैशेषिक सांख्य, पातंजलि तथा वेदान्त) कहलाते हैं और तरह-तरह के भेष बनाते हैं। इनको परब्रह्म की पहचान नहीं होती। हृदय अहंकार की अज्ञानता से भरे होते हैं।

श्रीपात पंडित ब्रह्मचारी, भट वेदिया वेदांत।
पुराण जोई जोई सर्वे पडिया, परमहंस सिधांत।। ११ ।।

कोई अपने को श्रीपाद (पूज्यपाद), कोई पंडित, कोई ब्रह्मचारी, कोई भट्ट, कोई वेद के जानने वाले अपने को द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी कहलवाते हैं। कई वेदान्ती कहलाते हैं और कई पुराणों को देख-देखकर तथा पढ़कर परमहंस कहलाते हैं।

अलप अहारी निद्रा निवारी, सब्द सत विचारी।
आचारीने नेम धारी, पण मूके नहीं अंधारी।। १२ ।।

कई थोड़ा आहार करते हैं। कई नींद को हटा देते हैं। कई शब्दों पर सौ तरह से विचार करते हैं। कई आचार-विचार पर ध्यान देते हैं। कई अपने नियमों का पालन करते हैं। पर किसी से अज्ञान का अन्धकार नहीं छूटता।

Nijanand App

संत महंत अनेक मुनिवर, देखीतां दिगंबर।
जाए सहुए प्रघल पूरे, कापडी कलंदर।। १३ ।।

कई सन्त, कई महन्त, कई मुनि, कई दिगम्बर (जैन साधु जो नग्न रहते हैं), कई कापडी (श्वेताम्बर, सफेद वस्त्र धारण करने वाले जैन मुनि), कई कलन्दर (फक्कड़ साधु) दिखाई देते हैं, पर कोई भी माया के प्रवाह से नहीं बचा।

सीलवंती सती कहावे, आरजा अरधांग।
जती वरती पोसांगरी, ए अति सोभावे स्वांग।। १४ ।।

कई सीलवंती (गुणवती) सती कहलाती हैं। कई पति को ही परमेश्वर मानकर पूजा करने वाली (आरजा) पत्नी कहलाती हैं। कई व्रत का पालन करने वाले कई नशीले पदार्थ का सेवन करने वाले ढोंगी दिखाई देते हैं।

मलक मुल्ला मलंग जिंदा, बांग दे मन धीर।
पाक थई थई सहुए पड़िया, मीर पीर फकीर।। १५ ।।

कई मलक (एक सन्त) कई मुल्ला (मौलवी), कई मलंग (बेफिक्र) और कई जिन्द (मुसलमानों के फकीरों का नाम) कहलाते हैं और अपने ढंग से प्रचार-प्रसार करते हैं। अपने को पाक समझकर संसार में पड़े हुए हैं (आगे का ज्ञान नहीं है) चाहे मीर, पीर या फकीर हों।

कई करामात कोटल, औलिया आलम।
बोदला बेकैद सोफी, जाणी करे जुलम।। १६ ।।

कई करामाती हैं। कई कुटिलता दिखाने वाले हैं। संसार में कई औलिया (ज्ञानी) कहलाते हैं। कोई बोदला, कोई बेकैद (कर्मकाण्ड से मुक्त), कोई सूफी (सन्त) तथा नशीले पदार्थों से मुक्त कहलाते हैं। यह सब जानते हुए भी अन्धे बनते हैं।

अनेक मांहें धर्म पाले, पंथ प्रगट थाय।
आंधला जेम संग चाले, ए पाखंड एम रचाय।। १७ ।।

इन्हीं के बीच में अनेक तरह धर्म पालक बनकर अपना पन्थ अलग से चलाते हैं। जिस प्रकार अन्धा साथी लेकर चलता है, उसी प्रकार यह लोग पाखण्ड लेकर चलते हैं। यह संसार पाखण्डी है।

रमें मांहोंमांहें रब्दे, करे परसपर क्रोध।
मछ गलागल मांहें सघले, मूके नहीं कोई व्रोध।। १८ ।।

यह सभी आपस में वाद-विवाद करते हैं। आपस में क्रोध करते हैं। ठीक उसी तरह जैसे दरिया (नदी) में मगरमच्छ अपनी शत्रुता और क्रोध को नहीं छोड़ता है।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ १०६ ॥

पंथ पैंडों की खेंचा खेंच

कोई कहे दान मोटो, कोई कहे गिनान।
कोई कहे विग्नान मोटो, एम वदे सहु उनमान।। १ ।।

कोई कहता है दान बड़ा है, कोई कहता है ज्ञान। कोई विज्ञान को बड़ा कहते हैं और इस प्रकार से सब अपनी अटकल से बोलते हैं।

Nijanand App